**Dr. Kumari priyanka**

**History department**

**H.D jain college, ara**

**Notes for pg sem 1**

## इतिहास लेखन की अवधारणा और उसके विकास का वर्णन करें।

◆ इतिहास लेखन की अवधारणा (Concept of Historiography)

'इतिहास लेखन' (Historiography) का अर्थ केवल इतिहास का अध्ययन करना नहीं, बल्कि **इतिहास को लिखने की पद्धति, दृष्टिकोण और स्रोतों का विश्लेषण करना** है।
अर्थात्, इतिहास लेखन से हम यह समझते हैं कि –
किस प्रकार विभिन्न युगों में विद्वानों ने अतीत की घटनाओं को देखा, समझा और प्रस्तुत किया।

**सरल शब्दों में –**

> इतिहास लेखन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा इतिहास का निर्माण, संकलन और व्याख्या की जाती है।

◆ इतिहास लेखन की मूल अवधारणा

1. **अतीत का वैज्ञानिक अध्ययन:**
   इतिहास लेखन केवल घटनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि उनके कारणों, परिणामों और प्रभावों का **वैज्ञानिक विश्लेषण** है।
2. **तथ्यों पर आधारित:**
   इतिहासकार को निष्पक्ष होकर स्रोतों की **समीक्षा और सत्यापन** करना होता है।
3. **दृष्टिकोण का प्रभाव:**
   इतिहास लेखन उस काल, संस्कृति और विचारधारा से प्रभावित रहता है, जिसमें इतिहासकार कार्य करता है।

---

## ◈ इतिहास लेखन का विकास (Development of Historiography)

### इतिहास लेखन की परंपरा समय के साथ विकसित होती रही है –

*1. प्राचीन काल*

- भारत में इतिहास लेखन की शुरुआत **वेदों, पुराणों, महाकाव्यों (रामायण, महाभारत)**, और राजवंशीय अभिलेखों से हुई।
- इन ग्रंथों में इतिहास को **धार्मिक और नैतिक दृष्टिकोण** से देखा गया।
- **कल्हण का 'राजतरंगिणी'** (12वीं सदी) भारत का पहला व्यवस्थित इतिहास ग्रंथ माना जाता है।
- यूनान में **हेरोडोटस (Herodotus)** को 'इतिहास का जनक' कहा गया। उसने इतिहास को कथा और तथ्य के मिश्रण के रूप में लिखा।

2. मध्यकालीन काल

- मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन मुख्यतः **दरबारी इतिहास** था।
- मुस्लिम शासकों के समय में इतिहास लेखन **राजा-केंद्रित और धार्मिक दृष्टिकोण** से किया गया।
  उदाहरण:
  - अलबरूनी की *'तहकीक-ए-हिंद'*
  - अबुल फजल की *'आइने अकबरी'* और *'अकबरनामा'*
- इन ग्रंथों में राजनीतिक और प्रशासनिक विवरण प्रमुख रहे।

3. औपनिवेशिक काल

- ब्रिटिश इतिहासकारों ने भारत के इतिहास को **पश्चिमी दृष्टि से** लिखा।
- उन्होंने भारतीय समाज को "स्थिर" और "परिवर्तनहीन" बताने का प्रयास किया।
- यह काल **औपनिवेशिक इतिहास लेखन (Colonial Historiography)** का कहलाया।
  उदाहरण: जेम्स मिल की *'हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया'*।

4. राष्ट्रवादी इतिहास लेखन (Nationalist Historiography)

- भारतीय इतिहासकारों ने ब्रिटिश दृष्टिकोण का विरोध किया।
- उन्होंने भारत के गौरव, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को प्रमुखता दी।
  उदाहरण:
  - आर.सी. मजूमदार
  - के. पी. जायसवाल
  - विष्णु शास्त्री चिपलूणकर
  - हनुमान प्रसाद पोद्दार
- इस काल में इतिहास लेखन का उद्देश्य भारतीय अस्मिता और स्वाभिमान को जागृत करना था।

5. मार्क्सवादी इतिहास लेखन

- यह दृष्टिकोण **आर्थिक वर्ग-संघर्ष, उत्पादन संबंधों**, और **सामाजिक संरचनाओं** पर केंद्रित रहा।
- इतिहास को शासक और शोषित वर्ग के संघर्ष के रूप में देखा गया।
  उदाहरण: डी.डी. कोसांबी, आर.एस. शर्मा, इरफान हबीब।

6. उत्तर-औपनिवेशिक एवं उपनिवेशोत्तर इतिहास लेखन (Post-Colonial Historiography)

- इस काल में इतिहासकारों ने औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी दोनों दृष्टिकोणों की समीक्षा की।
- उन्होंने **जनजातीय, दलित, महिला, और उपेक्षित वर्गों** की आवाज़ को केंद्र में रखा।
  उदाहरण: **सुबाल्टरन अध्ययन समूह (Subaltern Studies Group)** – रणजीत गुहा, पार्थ चटर्जी, गायत्री स्पिवाक आदि।

🔶 निष्कर्ष

इतिहास लेखन का विकास **मिथकीय और धार्मिक कथाओं** से प्रारंभ होकर **वैज्ञानिक, विश्लेषणात्मक और बहु-दृष्टिकोणीय अध्ययन** तक पहुँचा है।
आज इतिहास लेखन केवल राजाओं और युद्धों का विवरण नहीं, बल्कि **समाज, संस्कृति, स्त्री, दलित, पर्यावरण और विचारों** के इतिहास का भी अध्ययन बन चुका है।

🔶 संक्षेप में सारांश

| काल | प्रमुख विशेषता | उदाहरण |
|---|---|---|
| प्राचीन | धार्मिक-नैतिक दृष्टिकोण | वेद, पुराण, राजतरंगिणी |
| मध्यकालीन | दरबारी व धार्मिक इतिहास | अकबरनामा, तहकीक-ए-हिंद |
| औपनिवेशिक | ब्रिटिश दृष्टिकोण | जेम्स मिल |
| राष्ट्रवादी | भारतीय अस्मिता केंद्रित | आर.सी. मजूमदार |
| मार्क्सवादी | वर्ग-संघर्ष दृष्टिकोण | डी.डी. कोसांबी |
| उत्तर-औपनिवेशिक | उपेक्षित वर्गों का इतिहास | रणजीत गुहा, पार्थ चटर्जी |